

Handwritten text in a cursive script, likely a medieval manuscript. The text is arranged in several lines, with some words written in red ink (rubrication). The script is dense and difficult to decipher, but appears to be a form of Gothic or similar medieval hand.

Handwritten text in a cursive script, likely a medieval manuscript. The text is arranged in several lines, with some words written in red ink (rubrication). The script is dense and difficult to decipher, but appears to be a form of Gothic or similar medieval hand.

Handwritten text in a cursive script, likely a medieval manuscript. The text is arranged in several lines, with some words written in red ink (rubrication). The script is dense and difficult to decipher, but appears to be a form of Gothic or similar medieval hand.

Handwritten text in a cursive script, likely a medieval manuscript. The text is arranged in several lines, with some words written in red ink (rubrication). The script is dense and difficult to decipher, but appears to be a form of Gothic or similar medieval hand.

नागप
मन्त्र

नागप
मन्त्र

नागप
मन्त्र

ॐ श्री हूँ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वाहा ॥ नागपूजा मन्त्र ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वध २ सूत्रय काननू पिनि स्वाहा ॥ गाउनया यवल स कसागम गधिवि
 यमन्त्र ॥ ॐ वनू ननाग नाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ नागपूजा मन्त्र ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥



॥ श्रुतिप्रथमं यथाय ॥ ॥ धनत्रिंशत् ॥ गुणमल्लुन यथाय
 यथा ॥ सिद्धता ॥ गुणमल्लुविसर्जन ॥ समाधि ॥ कुमाधिवास
 ॥ निराज ॥ नायथाय ॥ ॥ धनत्रिंशत् ॥ वननद्वय ॥ यमद्वय
 नवनागद्वय ॥ स्वानद्वय ॥ ॥ रावनी ॥ धन ॥ निराज ॥ न
 लादाग्निवक्रा ॥ यथा ॥ यथा ॥ सिद्ध ॥ जजम ॥ स्वान ॥ दाकि

॥ यथाय ॥ अर्थयाय ॥ न ॥ दद ॥ ताय ॥ अ ॥ कु ॥ द ॥ इ ॥ कु ॥ लु ॥
 धनदा ॥ अ ॥ य ॥ ध ॥ म ॥ ॥ धू ॥ य ॥ दि ॥ य ॥ उ ॥ य ॥ ध ॥ य ॥ मि ॥ ॥ ना ॥ दा ॥ म ॥
 त ॥ अ ॥ ॥ य ॥ दा ॥ कि ॥ स ॥ य ॥ ध ॥ म ॥ त ॥ द ॥ य ॥ ॥ ॥ ध ॥ न ॥ त्रि ॥ श ॥ ज ॥ ल
 दा ॥ म ॥ या ॥ य ॥ ॥ का ॥ प ॥ स ॥ न ॥ र ॥ य ॥ य ॥ न ॥ थ ॥ दा ॥ अ ॥ ॥ धि ॥ स ॥ स ॥ न ॥ द ॥ दा
 न ॥ त ॥ ॥ दि ॥ न ॥ वि ॥ दि ॥ न ॥ ॥ उ ॥ र्थ ॥ न ॥ ॥ रा ॥ व ॥ ना ॥ ॥ द ॥ य ॥ त्रि ॥ श ॥ व ॥ न ॥ य ॥

धूय निनाजं न ॥ गानवा मतरु ॥ यूजामडा गथं ॥ यूजा
सा ॥ धनकसिवाकू ॥ अक्रुणवात्रा ॥ आवाहानय ॥ मरु
अक्रुणनहाने ॥ धननि ॥ अर्घयाय ॥ दिगविदिगउथं ॥
पूजामरु ॥ पूष्यन्यास ॥ वनियूजा ॥ कदात्रेव वनिसद्वाय
धन ॥ कसि ॥ साधन ॥ दा ॥ यवामृत ॥ यश्चरगन्ध ॥ धनंज

जनहामस ॥ यश्चविहिहकं गमक ॥ मवता ॥ मूमात्र ॥ ज
लहाम ॥ कायनास ॥ अर्घयाय ॥ इर्वाकू ॥ अक्रुण ॥ नाय
धनितयाज ॥ अर्घ ॥ हितिरुनसा ॥ स्नान ॥ वृक्षप्रता ॥ सं
जफ ॥ पतिष्ठा ॥ लावना ॥ धूय ॥ निनाजं न ॥ लाहानिचक्र
॥ लावना ॥ स्नानयाय ॥ यश्चरगन्ध ॥ यश्चरगन्ध ॥ चतुसिंध

ॐ नमः श्री वज्रसत्त्वाय ॥ श्री धोले नमः पुनः कृत्वा ॥ ॥
 जी समाधिः कुम्भाधिवासनश्चनलिः ज्ञानघवगुल्लोपि
 त्वायनं शारुनयनः वायः दिगविदिगः महावकुंशुप
 नंयंगय ॥ ॥ धनरावना ॥ अटितिशूचतानंतत्रकुंज
 ४ वक्रनिश्चनं लावना समायनं वेवावना ४ यत्रिलभभन

मागधुजाविधि ॥

१ लं ३ २ दक्षिण कनन खड्गधारी ५ २ प्रकुं ५
 वज्रवतूलस्तुटिकमयः सर्वो गभीतं मनूष्यास्यं सफदि
 हलविदधितं द्विरुडुं वासुकनूलमगया सधारी तिली
 तं वक्रं लां समायनं सलिनं सवृक्ष वृत्रधं न जात न धं ४
 सय्याकारं समय सतीहिलाय ॥ तस्मिंस्त्रुद्विजवसिस्
 मायनरुहान सत्त्वयूयादिदान वृन ४ सनं विहाया ॥

५ ल ३

२ सनन वनेद कामन धूरय पुमधना ५

[illegible]

पञ्चाग्न्यं नारायणं श्रुतिं मथ्यते ॥ यत्तु न नक्तं कवेः
 श्रुतिं कमनाङ्गं मूर्धनं हि ज्ञातुं न पुरुं सयं कृत्वा ॥ ५ ॥ कमयं
 द्विहं गं कृतां कृत्वा नारायणं ॥ ६ ॥ गं काल उद्यति मन्य
 मर्दिं समयसत्तत्तमं न सत्तत्तं ॥ ७ ॥ अर्थादि द्यौर्मं नार्थां गु
 तवलि न विन्ययत् ॥ ८ ॥ यत्तु न यत्तु ॥ ९ ॥ पृदि यत्तु ॥ १० ॥
 सिद्धाय ॥ १ ॥

नं सयकृत् ॐ कूं मूं नूं कूं द्वि उं ॐ ॐ कूं मूं नूं कूं कूं ता ॐ लि नं
 ना रु न ध ४ स प्या का नं उ य नि म नं नूं यं स म य स त्वं वि रा च ॥
 तत्स मं ह्म न स त्वं ॐ र्घा दि कं कृ त्वा तत् ४ व त्रि नं वि रु य त् ॥
 ॥ धू य ॥ र्घा दि कं ॥ सा न्ध ॥ ॐ र्घा दि कं ॥ ॐ र्घा ४ त क्क का ये
 ॐ र्घा ॥ पञ्चा म नु ॥ ॐ त क्क क म ह्ना ना ग धि य त य न् ॐ र्घा
 न कि २

५२

पञ्च ल य न य २ ज म्ब दि य व म्बा य य २ ॐ न ॐ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥
 ॥ ३ ॥ ॥ उ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥ ॐ र्घा ॥
 द्वि न मि नं रु नि ता र्घा ॥ द्वि उं ॐ कूं मूं नूं कूं कूं ता ॐ लि नं ना रु न ध ४
 स प्या का नं उ य नि म नं नूं यं स म य स त्वं तत्स मं ह्म न स त्वं ॐ र्घा दि
 कं य न स त्वं कृ त्वा तत् ४ व त्रि नं वि रु य त् ॥ ॥ धू य ॥ र्घा दि कं ॥
 वा १

वाक्॥ पृथ्वादिपूजा॥ ॐ आ४ वायुकिमहं स्वाहा॥ पूजामन्त्र॥ ॐ
आ४ वायुकिमहं नागप्रियतयन्महं कूयजलपूरयश्चमूदिव
वप्राययश्चनहं स्वाहा॥ ४ ॥ आ४ ॥ ॥ सर्वघानुमि
भक्तमयं स्वस्तिकाक्षभीर्षसकरुणां यितद्विद्युतेकमूर्खं क
ताञ्जलिर्न नाहं नमः४ यन्नगकानं उग्रनम्रनूर्यसमयसर्व

लपकमन्त्र

तत्समयं लपनसर्वज्यादियन्नसन्नकृता तन्ननिर्वितयन्
॥ वयं वा ने॥ मूवकीकूम॥ पृथ्वादिपूजा॥ ॐ आ४ सर्वघा
नायहं स्वाहा॥ पूजामन्त्र॥ ॐ आ४ मन्त्रघा नायमहं नागप्रि
प्रायन्महं कूयजलपूरयश्चमूदिवप्राययश्चनहं स्वाहा॥ यं
लां र्क्षमु४ ॥ ५ ॥ ॥ नमः॥ केक्षादक कांममयः

कमु४

सफरुल्ल ०००० नीनारु (म्वतन स्वाति यया इभात्रं द्विउउक
मख्वकृता जलि नारु नध ४ उजं नम कारी उय निमनूषा समः
यसर्वं तत्समय हान सत्व अथादि कृत्वा गते वनि विरुयग
॥ धय ॥ नैये के ॥ ॥ हा यदा सु ॥ यथा दि यज्ञा ॥ उभा ४ कको
टकाय ४ ॥ यज्ञा मकु ॥ उभा ४ कको टकाय महानागमधि
४ उभा ४ कको टका मकु स्वाहा

पतय यना निजलमा नारुय २००० रुज म्वदिय कूपजलव वाः
यय २००० नै ४ स्वाहा ॥ य. सा. र्घ. मु ॥ ६ ॥ ॥ वायव ॥ ॥
कनिक लाहमय सफरुल्ल पितृगकन त्रिगवल् ००००
कनाली द्विगकल् ०००० द्विउउक मख्व कृता जलि नारु नध ४
नगा उय निमनूषा समय सत्व गत्सम हान सत्व अथाः

कसहा

दिक्कृत्वा गते व विविहयत ॥ धूपं यें नै ॥ यवादि ॥ यथा
विप्रा ॥ उं आ ४ कृ नि काय ई साहा ॥ यज्ञा मनु ॥ उं आ ४ कृ त्रि कु
ना गुप्ति पनय ॥ ॐ हं कृ यज्ञ स पनय जम्बुद्विप वषा यय २ ई
नै ई साहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ मा नै महा यै नै नृया मय नी सा
त्य नदि दमि नै सफरु मा क श्रु क व लू द्वि उ जे क मं र्वे कृ ना ३

२ दि ४

पृष्ठ २ य २

जलि नारु नृ ४ य जगं उयात्र मनश्च समय सत्क गता मरु
न सत्क यथा दिक्कृत्वा गते व विविहयत ॥ धूपं यें नै कं
॥ ययेये ॥ यथा विप्रा ॥ उं आ ४ महा यज्ञा य ई साहा ॥ यज्ञा
मनु ॥ उं आ ४ महा यज्ञा य महा य ना गुप्ति पनय ॥ ॐ हं कृ यः
जगं पनय जम्बुद्विप वषा यय २ ई नै ई साहा ॥ यं ता र्वे मु

म० उ० म० य० व० य० न० य० प० वि० पू० न० य० शी० व० ज० ध० न० आ० डा० य० य० न०
 रु० रु० न० य० य० प० गि० रु० सा० दा॥ ॥ म० ता० द्र० त्र० ॥ कमि० हा० त० पू० डा०
 या० अ० न० पो० त० डा० हा० य॥ ॥ न० डा० क० थ० द० न० क० ॥ गि० ज० य० त्र० म० दा०
 व० क० त० य० क० न० व० का० थ० ॥ अ० न० न० का० य० य० क० व० वा० क० द० न० क॥ य०
 ध्या० नि० पू० डा॥ यं० लां० र्क० सु० ॥ म० ध्रु० व० थि० न० क० हा० न० त० न० क॥

म० ता० द्र० त्र० ॥ क्र० मा० प० न० ॥ द० श्रि० अ० य० डा० स० ल० ग० न० ता० न० आ० सि०
 ब० द० वि० स० र्क० न० ॥ ॥ नू० ति० ना० ग० य० डा० स० मा० य० ॥ ॥ न० म० ॥
 ए० न० म० ४० व० ज० स० हा० य० ॥ य० ना० लि० क० य० थ० य० न० ४० न० लि॥
 आ० ग० म० स० ए० नि० वा० य० ६॥ म० ६॥ वृ० हि० त० य० वि० ज० ह० न०
 श्री० उ० या० वि० हि० सा० वा॥ ॥ य० र्क० ॥ वृ० हि० सा० न० वा॥ वि० ज०

ज० य० व० य० न० य० प० वि० पू० न० य०

॥ ॥ न० म० ॥
 ॥ ॥ न० म० ॥
 ॥ ॥ न० म० ॥
 ॥ ॥ न० म० ॥

निज॥ धाउ न॥ दन्त्रि॥ विहि मास॥ विज पृथ नाग॥ धाउ
सिज॥ यन्त्रिम॥ रहि च॥ विज कस ल॥ नद्र मनि क॥
उरु न॥ विहि यूवा॥ विज मत्र॥ धाउ अहा॥ अन्ना॥
विहि हान्न॥ विज कर्कत॥ धाउ मत्र॥ नेपथ्य॥ विहि
६० यूका॥ विज धंदु न॥ धाउ जिदि॥ वायू न॥ विहि हायू

हान्न॥ विज नाउत धाउ न॥ ६० मं॥ विहि कां नत विज मृटि
धाउ कं न॥ हनुति यवा मृत॥ हिति॥ उषि इत सां रनिवा
वेरु का यास्यं तयक॥ सस्ति वाक्कन॥ धून दाउ॥ यति कृया घ न
ध्वनि॥ अस्मिन्ना॥ नैव॥ हि नायाउ॥ नाग य म्बदल अरु नाग वा
यकं॥ हनु नथ॥ वन्दु विवृतयाउ॥ मथ॥ यत्र स्वात्र न दूयक
नन गुरु विधान॥

^{सं} तजं महिखा सनसि तं ॥ जमदधु कनक्षाय श्री हनक नमा
मिहं ॥ २ ॥ ^३ **उद्धरुटिक** संका सं गुरुनाम प्रियपुरु ^३ कनमनी
कनक्षाय वनूनाय नमामिहं ॥ ३ ॥ **सूनाका** य महातजं ज्ञात्र
कात्र समप्रती **गुम्ब** रूप युदाद्राय कूवनाय नमामिहं ॥ ४ ॥
^{कं} द्वादभादेख तजं सूना पात धनवीन वासकम उवक्षाय **गुजा** स

न नमामिहं ॥ ५ ॥ ^{का} **ला** ज्ञावर्ष महार्यं हाउरुतनरुषि तां स्वप्न
या गवर्षनवीनं **पुगा** सन नमामिहं ॥ ६ ॥ **पात** रुरुक सत्राही
सन्नादरुमहावर्षी वीवन वयनंदव मगसत नमामिहं ॥ ७ ॥
सूना पाति **पिभ** गं व **उद्ध** वर्ष महा कून सदा कल्यान तिरुव
पि यूना क क नमामिहं ॥ ८ ॥ **उद्ध** वक्ष **पि** त व **पु** व **पु** व **पु** व

रगं चरम कम पुनू कस्तुग. हं भा नू रन मा मिहं ॥ २ ॥ नायवा
 जमुयव न कृता जस्तिक न धृतां यमेषु नि स हि सैव. सय नाग
 न मा मिहं ॥ १० ॥ यिथि वि. कुम धनं वैव. अमृ ग कृ लु सैय कू।
 सर्वाङ्ग कल कव लु. यमा सन. न मा मिहं ॥ ११ ॥ ततः क
 रथा यन ॥ कय नास. सैव नैव गय ॥ ॥ अमृ न क वा उ दि त
 क का मि ३२ त न

कक. ककाटक. यम. महायम. मय पात्र. कलीक. वनू ल पात्र द
 ती महादवति. सा म सि सि. महा सि सि. दं लु धन. महा द लु धन ३
 अय नात्र. दू नू रन द्वा यन द. सा गत्र. महा सा गत्र. अमृ न व ग य ग
 यी का कि महा को कि. सू न य महा सू न य. तडा लीक. महा द न सि
 नि २ महा सि नि रु महा धि य त य. यम नी. कय. आ ग त्व या ना

उनामः

धैः सुस्ति स्वाहा ॥ **तथा ज्ञाय ध्यान ॥** ॥ **तथा ज्ञाय मन्त्रे मः**
धैः वंका नन यद्म मा नंवा तद्पत्रियं कान्त्रिजं वनूननयः
 जकमूखद्विहज उकवर्ष सकरुषा र्ककत वामुयासधना ॥ **पूर्वद**
 नः अनकनागनाजा निनवधु गिरुषा ॥ **दक्षिणद** ॥ ममतागना
 जा उकवर्ष यधेरुषा ॥ **पश्चिमद** ॥ तदकनागनाजा यकवर्ष नव

रु॥॥**ड**रुनदव॥वा॥उकिनागगाजा॥**म**व॥सक॥**प**॥ग्रद्व
॥स॥खपाजनागगाजा॥**न**क॥व॥सक॥॥**ने**॥अ॥क॥क॥क॥क॥नाग
गाजा॥**व**॥व॥न॥व॥स॥क॥॥**वा**॥य॥॥क॥॥नी॥क॥ना॥ग॥गा॥जा॥**क**॥क॥
म॥व॥स॥क॥॥**रु**॥॥**म**॥दे॥ने॥॥**मे**॥हा॥प॥द्व॥ना॥ग॥गा॥जा॥**ये**॥॥**यि**॥त॥व॥
स॥क॥॥॥**स**॥॥**स**॥॥**म**॥॥**ज**॥॥**वि**॥॥**श**॥॥**व**॥॥**स**॥॥**रु**॥॥**स**॥॥**म**॥॥**प**॥॥**न**॥॥**स**॥॥**म**॥॥

कृत्य संपल्लनं वृद्धा शाश्वतं वनं धनं पुष्टं कृतं महाधि
पतय ॐ हं जन्मदिव्यं यनारी तायं गगनं २ हं वल ॥ **यं ताः**
यं सुधा निराजं नु ॥ ॥ गकिनाजं ३ तकिनाजं मडा ॥ ३ वं
नल्लाय यं स्वाहा ॥ ३ अन्नकायं स्वाहा ॥ ३ वायुकिं वं ॥ ३

तुष्टकायं नं ॥ ३ पुष्टकायं नं ॥ ३ मदा पुष्टकायं नं
॥ ३ सख्युनायं नं ॥ ३ कक्षाटकायं नं ॥ ३
कालीकायं नं ॥ **यं तां यं सु** ॥ वनल्लदया नागना
जातं स्वस्वदं वदं वदं ता सत्वास्थय सदानि ह्यं वनल्ल नमः
॥ सर्वतथागत कायविश्वधन स्वाहा ॥ सर्वं स्वन स्वाहा ॥ ३

८५ #

१५८१६५५
२०२५

१५८१६५५
२०२५

१



२ ना ५

वज्रदर्शनं ॥ **असकनकन** ॥ इन्द्रधनुः ॥ उं ख (ॐ) ना हूं
 ॥ **ममांजनसिमाविय** ॥ उं वनेषियतयसर्वविश्वरूप ॥
 लसिमा वीहिधनुः ॥ उं ख (ॐ) ना हूं स्वाहा ॥ उं वसव
 मुकुनः कानैल वंरुत्रयमानं मुकुवजं विशाखा ॥
यमीनद्वय ॥ उं वज्रवसुताय स्वाहा ॥ उं वाधिवक्राय स्वाहा ॥ उं व
 वनेसि.

१ उं वल्लोतमि

१ इवल्लोतमि २ अवसि पिल्लासि ३ वज्रसि

जयं ह्याय स्वाहा ॥ उं वज्रनकाय स्वाहा ॥ उं वज्रकूर्वाय स्वा
 हा ॥ उं वज्रसुरुमुका नाय स्वाहा ॥ उं अयतिवृद्धाय स्वाहा ॥
 वजायुक्ता स्वाहा ॥ ॥ सर्वपापदहनवजाय सर्वपापद स्वाहा नाय
 उं वज्रपृथ्वी स्वाहा ॥ वज्रवंगाय स्वाहा ॥ उं वज्रविश्वाय स्वाहा ॥
 उं सर्वार्थसिधाय स्वाहा ॥ उं वज्रद्वयं नरुनाय स्वाहा ॥ उं व

हाम

२ अरुग १ यीका २ गच्छा १ कालसि २ स्वांउम

१ गाय

१ सिद्ध

धनं नृणां प्रसादात्

जनास्त्यस्वाहा ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** मन्मथसुखं सदा ॥
वीर्यं दय ॥ **जनास्त्यस्वाहा ॥** धनं नृणां प्रसादात् ॥ धनं नृणां
सुखं नृणां ॥ जाय ॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥** धनं नृणां
सुखं नृणां ॥ १०८ ॥ तथा मन्मथसुखं ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥**
धनं नृणां प्रसादात् ॥ मात्रं नृणां प्रसादात् ॥ यत्नं नृणां प्रसादात् ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

२ आदितिविषयः

पतिनां गतायाः सुखं ददति ॥ मन्मथसुखं सदा ॥ वनं नृणां
वनं नृणां प्रसादात् ॥ तथा मन्मथसुखं ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥**
य ॥ आदितिविषयः ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥** यत्नं नृणां प्रसादात् ॥
मन्मथसुखं सदा ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥** यत्नं नृणां प्रसादात् ॥
मन्मथसुखं सदा ॥ **धनं नृणां प्रसादात् ॥** यत्नं नृणां प्रसादात् ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

मिसिंहनतायिना॥ तथामात्रवर्तुजाहो सर्वसत्त्वार्थकान्ध
त॥ तसमस्यं० नं० वं० लं० संकात्रजं वायुमिज्जन् पृथिविस
मेव० अस्येतिहं कात्रजं तदुभयसमस्यं वज्रस्यि सुमि० वः
जपाकान वज्रयजत्र वितातवितावा॥ विश्ववज्रवदिका
शैकुंजवक्रयविनामन० यभानि० सुवतवितावा॥ ० ॥

पेनां श्रीमु०॥ निलाकरन॥ अर्धयाय॥ यं लो० र्धमु०॥ वनिवि
य॥ थन० थानाडयाड० दमक्रिया० याय० विधिथं प्रतिष्ठा
याय॥ थनदवता दूति याय॥ थननि० विदिगवनिविय॥
आइति॥ तभाजनाग्निमुखन० उकात्रन० जवरुन० प्रसा
न० सुकवज वितावा॥ उ० अ० ए० य० स्वाहा॥ धृ०॥ उ० अ० यति० द

तव जाय स्वाहा ॥ कुम्भ ॥ ॐ वृजा यश्व स्वाहा ॥ सप्त ॥ ॐ वाविः
विक्राय स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ सर्वपाप दहन तव जाय सर्वपाप
दहन स्वाहा ॥ शुकुय स्वाहा ॥ ॐ वनपुष्प स्वाहा ॥ ॐ ह्यादि कथन वि
हिदका दूय ॥ ॐ सर्वसंपद कारिणि ॥ ॐ अमृतमय नमः ॥ ॥
पञ्चममृत अङ्गुलि इदं सप्त धृति ता सर्वसत्तया अङ्गुलि

तिविय ॥ ॥ धनवि महावनिविय ॥ ॥ धिजात्रा चं लो
र्ष ॥ ॐ युगि वनि स्वा न ता नै पक्ष्म याय ॥ ॐ स्व स ॥ इदं
तया अ सुवक्ष्म च न तया अ ॥ ॥ क्रमायन ॥ मधुन विस
र्जन संगम न तय ॥ युगपजा दक्षिण क्रमा निखक आ
सिवात सया इति ॥ ॐ स न मधुवपान सिधु मूदन जी

८ नागं पतत्वा यथा त मरुत्वा । उं कुवत्तुं उं मिलित्वा ॥ शुक्तिम
 लक्ष्मी यज्ञली यज्ञ वडाङ्गाय नागघ्न विगुं सतय ॥ ॥ थः
 नानि कूमात्री यज्ञा ॥ ॥ समया कर्त्तु ॥ ॥ जलदात वा ॥ ॥
 ॥ मज्जवृषं तासं वृ मृत्तयं वृ सदा वृ यत्रिष्टु वा विष्म न्य दे
 वं वृ मृ न्य ॥ आदो ग्वं मति रपा नी ॥ कुमिजी ग्व प्रजा यच्च ॥
 प्रियु ती वया सर्वमम दत्तं जन्मं पा नित्यं पवन वा वष

शुक्तिम
 लक्ष्मी
 नागघ्न
 विगुं

पावरास्य वर्यं मृपाना ॥ मया दानं तति विष्टु वृ मृ मा स्त
 स्ति ॥ ० ॥ वृत्ति जलदा म दामन त्रि वि समा फध ० ॥

॥ ॐ नमो नत्तुयाय नमः ॥ वल्लुवज्जपानयमहाज्जसनाप्र
त्य वन्धरसुपकात्रपि स्वाहा ॥ ॥ वीवनुकशि
कसफज्जफेनयुल्लिवन्धकाय्यः ॥ नत्तुपूर्वमवधम्मरा
नकेनरुतनकाविधन ॥

ॐ नमः श्रीवज्रसूत्रायः ॥ ॐ श्री ४ ह्रीं श्रीमद् वज्रसूत्राय नमः
अथादिः ॥ ॐ समन्ताह्वयकुमां वृद्धा अष्टादिषु सन्नितां ३ नमो वेनाः
वनाश्च नानवन्नय नागनाजा जवद्वन्ननत्वा सर्वताग समधिपः
सफाकृत्वरु अरासः ४ यवनाय मनूय कम सर्वसत्त्वजनज निधम्मा
य वन्नय सको २ ह्रीं ॥ ॐ गुरावगुद्धा सर्वधम्मादि ॥ गुरावगुद्धा

वता सको ॥ दक्षिणहस्तमूकानमसादि ॥ ॐ वज्रपद्महस्त ह्रीं ॥ ॐ
वृं श्रीं जिं र्वं ह्रीं ॥ ॐ नो मां प्रो तां श्रीं श्रीं तामा हस्तकनक २ मतिवं ह्रीं हस्त
ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध ॥ ह्रीं उषिष ॥ ह्रीं कर्मा ॥ ह्रीं वृद्ध ॥ ह्रीं नासिका
॥ ह्रीं वज्र ॥ ह्रीं कर्मा ॥ ह्रीं हस्त ॥ ह्रीं उषा ॥ ह्रीं पाद ॥ ह्रीं सिद्धा ॥
अंगन्यास ॥ ॐ श्री ४ ह्रीं ॥ त्रिकाया अविष्टान ॥ ॐ वं स्वाहा ॥ वज्रा ॥

शीव नूना ग नाजा स प वि वा ना इ ह्ता ॥ आकर्ष ॥ उँ व जा कू म ४ ज ल्यादि
॥ उँ पी व ज व नू न य व न सु क्ता ना य अर्ध आ च म नं प ति च्छु त्वा हा ॥ ज हूँ व
हूँ ॥ ॥ पू ष्य ग्या म ॥ उँ आ ४ वे ना च नि र व व ज व नू न य व ज पू ष्य प
ति च्छु त्वा हा ॥ उँ वं वि जा र वा य व नू न ना ग ना जा य व ज पू ष्य प ति च्छु त्वा
हा ॥ उँ आ ४ व ज व नू न ना जा य ५ ॥ द धू स ॥ उँ वा यु कि ना ग ना जा य ५

॥ हूँ २
॥ हूँ अ न ॥ उँ ग क का य ५ ॥ ख अ स ॥ उँ क क्का ट का य ५ ॥ अ अ न ॥ उँ च
मा य ५ ॥ ज अ स ॥ उँ हूँ नू २ ना ग ना जा य ५ ॥ ख व का न ॥ उँ मं म हा प ना य
५ ॥ ख अ थ धू का ॥ उँ कू कू नि का य ५ ॥ ज अ थ धू का ॥ उँ मं मं त्र पा ना य ५
॥ ज अ का थू का न ॥ ॥ त द्वा अ प म स द्वा ल प ति का ॥ म धू स ॥ पू र्व स हू
अ न ॥ उँ गं ग म म ना जा य ५ ॥ उँ वं व द्र य हा ना ग ना जा य ५ ॥ उँ वं व का

नामनाजाय॥ॐ हूं सूर्यप्रसा नामनाजाय॥ॐ नमो नमो नामनाः
जाय॥ ॥ तमो दक्षिण दाल स पद्म मधु ॥ॐ नमो नमो नामनाजा
य॥ॐ नमो नमो नामनाजाय॥ॐ ॐ नमो नमो नामनाजाय॥ॐ
वैष्णव नामनाय॥ॐ हूं हर्षन नामनाजाय॥ ॥ पद्मिनी दानः
पद्मिनी मधु॥ॐ नमो नमो नामनाजाय॥ॐ सिं सिं नामनाजाय॥ॐ

ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥
 ॥ ततः ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥
 ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥
 ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥
 ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥
 ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥ ॐ श्री गुरु नाना गवाजाय ॥

गवाजाय ॥ नै ॥ ॐ हं समुद्रनागवाजाय ॥ वा ॥ ॐ वं वधनामना
जाय ॥ ॐ ॥ ॐ ला घं सु ॥ वसिष्ठनामवलगुनतत्रपं वलपराज
नपूष्य जवाय नंगन रुद्रागकनपूष्यजीधुपूष्य सुमावहिरिष्टिः
तः रुद्रिन्नववृणं नमामिहं ॥ ॥ ॐ नमस्तु नमामिहं नमोनम
हं ॥ सर्ववृण पूजायस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ सर्ववृणपत्रिण

ॐ आत्मानं निर्यातयामि ॥ सर्ववृणततिष्ठमाहमयष्टु पापं जसर्वः
मदतनूयकमनास्ति तद्वमयामि तिरितीकानुष्टु निवमनस्य पून
ताजिनानी सर्ववृणवृष्टु तं वृष्टु कनपशकं वरं भुजडिर्मनलः
कालिपूष्य ॥ तं सर्ववृण जमाष्टु दातदधी वृष्टु माहाज
नि ध्वयत्रिभमयामि ॥ आभुतदमवजसुनयं ययामि ॥ प्रधपूह

स्वनि कर्न कनू आ उ चि हं धर्म विभु द्विष्टु वृषा न नृदं समुचं संघ जिः
सम जग जन गु नि न म हतं ॥ निर्यात या मि नि रि नि ज दा ह त न व
क्षय सा र्ग ग ना य कृत्वा म कार्य । सु ध मि ना शि म त व द्रु नि जा ज ना थ
य न ॥ त्वं क रू स न ह न व प लि य हा य ॥ अ ह व ना मू क न च ना ल र य
वा धि जं ग उ र्ध शि धि या म नू त न वा धि प दं भा हा र्थ दं स्वा मा ध य म

सु प गु अ या न का । त न र्वा धि स म ल पू न घू न म । त थ य का न य वा य
ध र्म धि जा क र्ता त इ प त्रि लं का लं ना मि नि क र्ता न क र्ता लं क र ॥ त
इ प लि वं का न न य व न म्ब र द्य म्ब लं क र्ता । त इ प त्रि लं का नं य पृ थि वि
व द्रु न अ पि रु का नं नि भू चि क व जालं क र्ता ॥ त इ प त्रि लं का नं य सु म्भ
नू व द्रु न ल म र्थ क न म अ रू ह ग प म्ब रि त ॥ त इ प त्रि लं का लं नः

कृष्णमल चक्रनञ्चक्रुद्धानचक्रुतालनरूपितं ॥ हलालधालकि
 क्षिपिजालं वक्रुलिकमसिषपथर्कं ॥ गतमध्वपंकानयनिनामृतं प
 ममेशी विराया कणलकयाजाक कलिकापलिस्यर्थ कापनिमृतं ।
 वंकाववीजवन्मन्त्रेनाचनपनिनामृतं वन्मन्त्रागवाजास्वतव
 भूमनूष्यस्य सफरुनादिगं गुह्यं दिववटन वामकलनागपा

मवन्धन दयालिंगीतं नाशनधर्षणीलं काल विविस्वस्वस्वसंश
 रितं ॥ ॥ गतपूर्वद्वन्द्ववाधुकिनागवाजा स्वतवर्क नवरुध्मञ्च
 दित दक्षिणवलद वामदयालिंगीतं वाकानविजविराय ॥ ॥
 दक्षिणद्वन्द्वनदकनागवाजा वक्रवर्ण यं वरुनाद्युदिगं राकानवी
 ज दक्षिणमूरयहृक्ता वामदयालिंगीतपन्धत् ॥ २ ॥ पश्चिमद

लं क काटक नाग नाजा ह निगवर्धुं सफरुता द्वादितं क का नवीज
दक्षिण ललितं वा मधु द्या लिता रावयत् ॥ ॥ उरु न दन पद्म नाग
नाजा धूमवर्धुं शिरुध्वा दितं य काने विजं दक्षिण कृत्य वा मधु
द्या लिनिता रावयत् ॥ ॥ विदिता ॥ ॥ अथ यदं कं क द नाग ना
जाय कृष्णवर्धुं दमेरु ध्वा दितं कं कानवीज दक्षिण कवलधः

वा वा मधु द्या लिनी ता रावयत् ॥ ॥ नेमरा महा पद्म नाग नाजाः
शीत न कवर्धुं पीपी दम रु ध्वा दितं दक्षिण कृष्णध्वनं वा मधु द्या
न कृतं म काल विज रावयत् ॥ ॥ वायू यद ल्य कृ वि क नाग नाजा
विश्ववर्धुं शिला दया दम रु ध्वा दितं दक्षिण नल कृष्णध्वनं वा मधु द्या
लिनिता कं कान विज वि रावयत् ॥ ॥ अथ यदं कं क द नाग ना

नागनाजा पीतवर्धुनवरुताद्यादिर्गं मकारवीजविश्ववर्धन॥ ॥
मधु॥ ॥यद्यस॥आ॥या॥निर्वाजन॥ ॥पूर्वपद्मपतिकार॥स्वा
नवाय॥ ॥ॐ॥उववनागनाजा॥उपनिगजननागनाजा॥कुष्ठावर्धु
यस्त्राहा॥ मधु॥ ॥ॐ॥उववप्रनागनाजा॥उक्तावर्धुय॥॥दक्षिण॥ ॥
ॐ॥सूर्यप्रनागनाजा॥वक्तावर्धुय॥॥वाम॥ ॥ॐ॥मत्तवाहनागना

जा॥आमवर्धुय॥॥वाम॥ ॥दक्षिणदिगपतिका॥ ॥ॐ॥मंविः
जा॥नागनाजा॥पितवर्धुय॥॥मधु॥ ॥ॐ॥मपिप्रनागनाजा॥कु
ष्ठवर्धुय॥॥दक्षिण॥ ॥ॐ॥उववनागनाजा॥वक्तावर्धुय॥॥दक्षिण
॥ ॥ॐ॥वर्धनागनाजा॥वक्तावर्धुय॥॥वाम॥ ॥ॐ॥हाटभना
गनाजा॥ह्यामवर्धुय॥॥वाम॥ ॥पश्चिमद्वान॥ ॥ॐ॥मंमं

नागनागावकवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ सिंधूनागनागा कर्षुवर्धुयः
॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑ अश्वनागनागा खतवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑
वक्रानागनागा पीतवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ भीमानागनागा म्भसव
र्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ उरुवहावयलिका॥ ॥ॐ॑ मूलिवनागनागा
म्भसवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ अनननागनागा कर्षुवर्धुयः॥ दक्षिणः॥

॥ ॥ॐ॑ अनवतफनागनागा खतवर्धुयः॥ दक्षिणः॥ ॥ॐ॑ मत्सि
कनागनागा पीतवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ॐ॑ मत्वाकनागनागा न
कवर्धुयः॥ वामः॥ ॥ विदिगपनिकाकूनसः॥ ॥ॐ॑ अनवनाग
नागा खतवर्धुयः॥ मध्यः॥ ॥ॐ॑ नदननागनागा पीतवकाय
॥ नैमल्यः॥ ॥ॐ॑ समुद्रनागनागा वक्रम्भसायः॥ वायुः॥ ॥

[illegible]

वज्रि हूं । उं धर्म वज्रि हूं । उं कर्म वज्रि हूं ॥ समय सत्व ज्ञान सत्व स
वला लिते नैष श्रुत् ॥ ॥ अ वा ॥ ज ४ हूं वहा ॥ उं भूति धर्म महा वज्र
ह्यादि ॥ सकृद वज्र धृष्ट नामाचार्य ॥ कुं ओं जिं खं हूं ॥ उदकाति
धर्म पूष्य नास ॥ ॥ अथात संप्रवक्ष्यामि कोय मनु बभूवुः ॥ ॥
अंग नास ॥ उं विश्व कथ विश्व जन नासा वबूय नाग राजा विंद ॥

हैं मित्र ॥ हों उल्लिख ॥ उअ कागधवाव य वापु कि ॥ हों क ॥ व दान
य पूरुवनि गदा गजलनालिका मूपन दोयन नद कयाव ॥ हों व क
दया ॥ श्री गनिमानि सग संपयाल ॥ हों नासा ॥ गमन व अ द दौ क
को टक ॥ हों मूख ॥ द्विपन द्विलत पद स गाम व स ग द क ॥ उं कः
क नाद्या पूष्य त सवन स्य म नाद ग क नी र ॥ हों द द य ॥ य म नाः

म लंका व वाजल ॥ हों नाही ॥ माहाय म म ला ज ख ना ॥ हों उ अ
॥ क प द क वाध क निक ॥ हों पाद ॥ क साग वा नू ना ग ॥ हों निखा
॥ मू मू प ख यु व न्य म म ना म म म त गो लि व हो सा मा न्य ना म ला
य त ॥ जाय ॥ ॥ उं व नू अ य हूं वं हूं खा हा ॥ ॥ ग मा व लि द याः
त ॥ उं मू ४ व म नं प ति च्छा हा ॥ उं व ज व नू अ य ख र खा हि २ः

तिष्ठ २ वध २ मूक स्य ममि पूरि कनू २ पीछं आग वु २ वषा
पम २ हू २ रुट २ खाहा ॥ ३ आ ४ हू ४ जय विजय नदा पनंद पम
ककोटिक वापु कि मंखपा न कनिक २ नक गकक महापम स्य सप
निवान स्य ४ ०० द वलि गंध पूष्य धूप दिप मकन द दान्य हू गचा गु
स ४ सप निवाना ४ पीछं ०० म वलि ग २ खा द रु पी व रु ज ४ हू व

हा ४ सह फानु सर्व सत्वाना ४ ममि पूरि कनू हू २ रुट वज धन म
हूपय निवृत्ता हा ॥ ॥ प ला यं दु म ॥ ४० ति नाग स माधि
समाफ म ॥ ॥ ०० ०० ॥